

今夜有雨！就让我们用这场清凉的

秋雨，洗净我们灵魂里的污泥，做

回一个澄澈的自己！」

冷言冷语

幽微笔话系列丛书之一

刘青著



九州出版社 | 全国百佳图书出版单位

今夜有雨！就让我们用这场清凉
的秋雨，洗净我们灵魂里的污
泥，做回一个澄澈的自己！

冷言冷语

幽微笔话系列丛书之一 刘青 著



图书在版编目(CIP)数据

冷言冷语/刘青 著. —北京: 九州出版社, 2010. 7

(幽微笔话)

ISBN 978-7-5108-0611-7

I . ①冷… II . ①刘… III. ①随笔—作品集—中国—当代

IV. ①I267. 1

中国版本图书馆CIP数据核字(2010)第143889号

世相的镜子

——读刘青的《冷言冷语》兼及其他

唐朝太宗皇帝有言：以铜为镜，可以正衣冠；以史为镜，可以知兴替；以人为镜，可以知得失。镜子于人的作用可见一斑。读完刘青兄的倾心之作《冷言冷语》，不由地使人想到了镜子，并想起了唐太宗的这段话。其实，不光铜可为镜，史可为镜，人可为镜，言也可为镜，书更可为镜。

看过（不是读过）太多太多书，真不知现在多少书还能叫书？大量的印刷品质劣而价高。为了追求利益，出版商不是在有限的名人文章里做不同的选录，然后冠以“XX必读”之类的字样来糊弄读者；就是专打人际职场牌，把好好的一个人，教成职场诸葛，处处是谋略，步步要防范。不知道道德与诚信的渐失，这些劣质的印刷品是否该负一定的责任？更有出版商大打“名利”牌，什么“下一个老板就是你”，“下一个富人就是你”“出人头地的功夫”之类，出版追求利润无可厚非，更可恶的是那些只为了销量而出版的大量低俗、猎奇的文字。每每看到这样的书销量奇大，都会默然无语。

之所以把《冷言冷语》比作一面镜子，是因为在现今大量“利”字当头的读物中，它以其独具个性的表达方式，把作者独具慧眼的深刻认识，以随记的形式解读了当今的种种世相与心态，通过一个个点，汇聚映射出世相众生或狭隘、或丑陋、或可笑、或困惑的种种生相。作者以自己独到的眼光，一针见血地揪出了事物的本质，让原本或模糊或困惑的东西清晰地呈现，给了大众一面可自我观照的镜子。

《冷言冷语》全文为条目解释之形式，简洁而不掩深度，锋芒锐利，字字刚劲，每每读之，犹如醍醐灌顶，豁然开朗，深具智慧的力量，令人击节，更至欲罢不能。《冷言冷语》最初发布在全军政工网上，陆续发布出来之后，在军网得到了大量而广泛好评，跟贴众多，评价尤高。刘青兄本人也在全军网络文学大赛中多次获奖，并被聘为军旅文学频道特约编辑。

《冷言冷语》这面镜子的亮度和作用，不是几句溢美之词可以诠释的。它包含内容之多，涉及范围之广令人感慨。爱情、婚姻、世态、人性、男人、女人、商场、官场、利益、权谋……其比喻之妙，揭示事物本质之深，是真正的深入浅出之功。在此简单摘录几条以供读者先睹为快。

现象和本质：

说了算数的人往往很少说——现象是很少说，本质是说了算数；说了不算的人往往喋喋不休地说——现象是喋喋不休地说，本质是说了不算。

相爱：爱情是上帝分别给馈赠每个男女打了上暗记的圣物。只有暗记吻合的圣物，才能自然合璧，并享受那份完整的美妙所给你带来的愉悦。

相爱，绝不止于一男一女形影不离、朝夕相处那么简单。

自知之明：自知之明就是当别人把你当回事的时候，你要知道自己其实也就那么回事；当别人不把你当回事的时候，你一定要坚信自己其实也挺像回事。

马拉松：人生犹如马拉松，最终夺得冠军头衔的，往往并不是那个长时间里处在领跑位置上的人。

懂得耐力比速度更具有决定意义，你就不仅不会太过在意一时的风光而且又会十分可能藉此赢得最终的荣光。

成事不足，败事有余：成事不足的，有时候并不是因为我们没本事，恰恰

是因为我们有本事；败事有余的，有时候并不是因为我们有本事，恰恰是因为我们没本事。可见，有本事的人不一定就能成事，没本事的人倒是一定会败事。

支点与杠杆：真正能够当做我们人生支点的，或许唯有意志品质吧。然而，撬动我们人生目的杠杆，却可以有许多。以基础素质为杠杆的，可以轻易地做成一些事；以兴趣爱好为杠杆的，可以愉快地做成一些事；以环境条件为杠杆的，可以适当地做成一些事。

逆淘汰：用“潜规则”把“真理”捆住双脚，用“软政策”给“谬误”安上翅膀。然后，让它们在同一个跑道上竞技比赛。对了，为防止万一，还得请上“不公”作裁判，再开一道专供舞弊者使用的“后门”。

数据：一般情况下都有两个版本：一个是科学计算出来的，存放在保密柜里，供内部掌握；一个是任意编算出来的，公布在媒体上，让大众相信。

.....

这样喷珠溅玉的例子在书中比比皆是，哪怕闭上眼随便挑一段出来读，都会使人发出会心的笑。了解世相容易，剖析解读难，要把它用文字简短而准确地表达出来更绝非易事。我与作者相识已有几年，深谙刘青兄其人风采，为人谦虚而有气度，待人接物，隐然不卑不亢之态。不但性情敦厚，且幽默有加，不动声色之中，令人忍俊不禁。开解心事，春风化雨，轻描淡写却使人如沐春风。刘青兄曾为“不卑不亢”注解：“自降人格为卑，自抬身份为亢。而能够让人们自降人格、自抬身份的，莫外于权、钱、色。人都是人，何至于为此等身外之物轻贱自己的身内之心？给自己一颗高贵的心，给别人一颗平等的心。对上敬而不卑，对下和而不亢，足矣。”短短数十字，尽显作者内在之涵养。

刘青兄不但擅长写《冷言冷语》这种思想类随笔，更在文史上深具悟性与才华。他写的读史随感角度新锐，理解独特，使很多我们耳熟能详的历史故事和

历史人物具有了常人眼里不曾领略的新意，让人耳目一新，深受教益。他写的种种杂文随笔，从生活中熟知详见的小事入手，直指寻常事物之中不寻常的内核，启人深醒。其嬉笑怒骂皆文章的功夫，《冷言冷语》已可窥一斑。他还写诗，古体诗、现代诗均有。他的古体诗抛开韵律不谈，单单在表现力上就令人倾倒。他的现代诗自成风格，既有思想的灵光闪耀，又有清新古雅的文风，在众多的诗歌中自有其独特的艺术魅力。以现代诗《风吹过日子》中的一个片断为例：

风 似是丢了什么
心爱物件 低着头
用它轻浮的手 毛毛躁躁地
翻找着 翻找着它经过的地方
也翻找着日子
一遍又一遍

刘青兄的系列作品终于集辑成书了。这也是我等熟读他作品、熟知他为人的文朋们长期撺掇和期盼的。作为他一个忠实的读者和老友，闻此佳讯，不只为他高兴，更为自己窃喜。蜗居斗室有这样的佳作，得以时常信手翻阅，无疑是生活中一大快意之事。在现今这个快节奏的生活中，在刘青兄从军二十几年军事训练任务繁重、日常工作繁杂的岁月中，他为读者捧出这样一眼精神的甘泉、一面心灵的明镜，不仅殊为难得，更是读者之幸。

杜若 写于2010年5月28日

附：作者杜若，本名杜晓燕。现供职于海军大连舰艇学院政治系。中国散文学会会员，作品散见于国内外报刊，多次获奖。

目 录

| | |
|----------------|---|
| 序言..... | 1 |
| 理由..... | 1 |
| 关系..... | 1 |
| 表扬..... | 1 |
| 使命..... | 1 |
| 遗传..... | 1 |
| 区别..... | 2 |
| 远“交”近“攻”..... | 2 |
| 沉默..... | 2 |
| 聪明人、奴才、傻子..... | 2 |
| 现象和本质..... | 2 |
| 成事的基本原则..... | 3 |
| 语“像”..... | 3 |
| 角色..... | 3 |
| 领导水平..... | 3 |
| 交班..... | 3 |
| 幽默..... | 4 |
| 道德..... | 4 |
| 和谐..... | 4 |
| 爱情..... | 4 |
| 不良风气..... | 5 |

目 录

| | |
|---------|----|
| 闲话 | 5 |
| 诽谤 | 5 |
| 谣传 | 5 |
| “不健康场所” | 6 |
| 重要指示 | 6 |
| 瘦身运动 | 6 |
| 美容院 | 6 |
| 美容志愿者 | 7 |
| 演艺明星 | 7 |
| 写真 | 7 |
| 炒作 | 7 |
| 作秀 | 7 |
| 人气 | 8 |
| Fans | 8 |
| 超女PK | 8 |
| 逆淘汰 | 8 |
| 数据 | 9 |
| 典型 | 9 |
| 承受力 | 9 |
| 嗯啊 | 9 |
| 多与少的况味 | 9 |
| 自尊与虚荣 | 9 |
| 羡慕与嫉妒 | 10 |
| 聪明与智慧 | 10 |
| 知识与经验 | 10 |
| 英语 | 10 |
| 函授学习 | 11 |
| 善良与丑恶 | 11 |
| 自信与自卑 | 11 |
| 反应与反映 | 12 |
| 争功与诿过 | 12 |
| 务虚与务实 | 12 |
| 绯闻 | 12 |

| | |
|---------------|----|
| 另有所思的是..... | 12 |
| 落寞..... | 13 |
| 流言..... | 13 |
| 高尚..... | 14 |
| 心态..... | 14 |
| 细节决定成败..... | 14 |
| 阿谀逢迎..... | 14 |
| 狐假虎威..... | 14 |
| 下套..... | 15 |
| 诱惑..... | 15 |
| 鸠占鹊巢..... | 15 |
| 化妆..... | 15 |
| 化妆品..... | 15 |
| 婆媳关系..... | 16 |
| 爱情..... | 16 |
| 婚姻..... | 16 |
| 手机..... | 16 |
| 抑郁..... | 17 |
| 命运..... | 17 |
| 活法..... | 18 |
| “病态”..... | 18 |
| 指鹿为马..... | 18 |
| 不温不火..... | 18 |
| 未知与已知..... | 18 |
| 惊讶与纳闷..... | 19 |
| 民主与集中..... | 19 |
| 权利与义务..... | 19 |
| 智慧与美貌..... | 19 |
| 制造、创造、营造..... | 19 |
| 唱歌与跳舞..... | 20 |
| 权、钱、色..... | 20 |
| 坦率与奉承..... | 20 |
| 毒药与佳肴..... | 21 |

目 录

| | |
|---------------|----|
| 维纳斯..... | 21 |
| 盲者..... | 21 |
| 绝望..... | 21 |
| 狡猾..... | 21 |
| 酒“文话”..... | 22 |
| 机关..... | 23 |
| “倒服务”..... | 23 |
| 桌签..... | 23 |
| 电视电话会议..... | 24 |
| 调子、表态、落实..... | 24 |
| 创造性..... | 24 |
| 怀才不遇..... | 24 |
| 笑话..... | 25 |
| 改变..... | 25 |
| 君子..... | 25 |
| 小人..... | 25 |
| 文人相轻..... | 25 |
| 同行是冤家..... | 25 |
| 绿叶与红花..... | 26 |
| 表现欲..... | 26 |
| 勤奋..... | 26 |
| 节俭..... | 26 |
| 享受..... | 26 |
| 免疫力..... | 27 |
| 平凡与不凡..... | 27 |
| 利益..... | 27 |
| 孝顺..... | 27 |
| 归属..... | 27 |
| 扬长避短..... | 28 |
| 愿望与现实..... | 28 |
| 得与失..... | 28 |
| 丰富..... | 28 |
| 初恋..... | 28 |

| | |
|---------------|-----|
| 热恋 | ·29 |
| 暗恋 | ·29 |
| 网恋 | ·29 |
| 失恋 | ·29 |
| 权衡 | ·30 |
| 批评 | ·30 |
| 讲评 | ·30 |
| 总结 | ·31 |
| 民主测评 | ·31 |
| 副职 | ·31 |
| 推诿 | ·32 |
| 孤独 | ·32 |
| 自我吹嘘 | ·32 |
| 变化 | ·32 |
| 进步 | ·32 |
| 姗姗来迟 | ·33 |
| 政治舞台 | ·33 |
| “成功”的另类法则 | ·33 |
| 外力 | ·33 |
| 庸俗与高尚 | ·33 |
| 错失良机 | ·34 |
| 经验 | ·34 |
| 小偷、骗子、强盗、贪官污吏 | ·34 |
| 麻将 | ·34 |
| 苦衷 | ·35 |
| 报复 | ·35 |
| 仇恨 | ·36 |
| 度量 | ·36 |
| 黑锅 | ·36 |
| 宽容 | ·36 |
| 冷漠 | ·36 |
| 麻木 | ·37 |
| 相爱 | ·37 |

目 录

| | |
|------------|----|
| 爱情与家庭..... | 37 |
| 第三者..... | 37 |
| 情人..... | 38 |
| 问题..... | 38 |
| 疯子..... | 38 |
| 人生如画..... | 39 |
| 了解..... | 39 |
| 傲慢..... | 40 |
| 自杀..... | 40 |
| 流行..... | 40 |
| 自知之明..... | 40 |
| 暗箭..... | 40 |
| 伪装..... | 41 |
| 男女有别..... | 41 |
| 内心与外表..... | 42 |
| 言不由衷..... | 42 |
| 口不择言..... | 43 |
| 习惯..... | 43 |
| 金钱..... | 43 |
| 谎言..... | 43 |
| 幼稚与成熟..... | 43 |
| 固步自封..... | 44 |
| 相互比较..... | 44 |
| 梦..... | 44 |
| 热情..... | 44 |
| 态度与能力..... | 44 |
| 狂傲..... | 44 |
| 尊敬和畏惧..... | 45 |
| 浪漫..... | 45 |
| 换位思考..... | 45 |
| 逆向思维..... | 45 |
| 附和..... | 45 |
| 打哈哈..... | 46 |

| | |
|-------------|----|
| 捧场 | 46 |
| 明星代言 | 47 |
| 虚假广告 | 47 |
| 弱点 | 47 |
| 顽强与坚持 | 48 |
| 想法与办法 | 48 |
| 选择 | 48 |
| 看法 | 48 |
| 风雅 | 49 |
| 失口、失仪、失态、失德 | 49 |
| 约束 | 49 |
| 伞 | 49 |
| 人生如纸 | 49 |
| 水与油 | 50 |
| 缺失 | 50 |
| 英雄 | 50 |
| 评论家 | 50 |
| 骗子 | 51 |
| 道德教化 | 51 |
| 成见 | 51 |
| 现场会 | 52 |
| 败笔 | 52 |
| 细心与粗心 | 52 |
| 瞻前顾后 | 52 |
| 请示报告 | 52 |
| 批评与自我批评 | 53 |
| 圈里人 | 53 |
| 内外有别 | 53 |
| 口头禅 | 53 |
| 程序 | 54 |
| 无聊和有趣 | 54 |
| 商量 | 54 |
| 倒彩 | 54 |

目 录

| | |
|------------------|----|
| 赢家..... | 55 |
| 和事佬..... | 55 |
| 人善被人欺，马善被人骑..... | 55 |
| 挑剔..... | 56 |
| 心想事成..... | 56 |
| 不假思索..... | 56 |
| 真理..... | 56 |
| 认真..... | 56 |
| 对手..... | 57 |
| 满足..... | 57 |
| 工作报告..... | 57 |
| 吃醋..... | 57 |
| 卖弄..... | 57 |
| “灯下黑”..... | 57 |
| 匿名信..... | 58 |
| 预言家..... | 58 |
| 讽刺与含蓄..... | 59 |
| 学习与文凭..... | 59 |
| 得意..... | 59 |
| 真相..... | 59 |
| 博学..... | 60 |
| 加班..... | 60 |
| 欲盖弥彰..... | 60 |
| 金丝笼..... | 60 |
| 价值..... | 60 |
| 迁就..... | 61 |
| 勇敢..... | 60 |
| 懦弱..... | 61 |
| 忍耐..... | 61 |
| “暗箱”..... | 62 |
| 希望、企望、绝望..... | 62 |
| 造化..... | 62 |
| 玩性..... | 62 |

| | |
|-------------------|-----|
| 现实主义与浪漫主义..... | ·63 |
| 悲剧..... | ·63 |
| 怀疑..... | ·63 |
| 秘密..... | ·63 |
| 癞蛤蟆想吃天鹅肉..... | ·63 |
| “一朵鲜花插在牛粪上” | ·64 |
| “三人行必有我师” | ·64 |
| 平等与不平等..... | ·64 |
| 誓言..... | ·65 |
| 公车..... | ·65 |
| 广告..... | ·65 |
| 明星的签名..... | ·66 |
| “草根” | ·66 |
| 朋友..... | ·66 |
| 汽车尾气..... | ·67 |
| 哭比笑好..... | ·67 |
| 方式..... | ·68 |
| 吵架..... | ·68 |
| 百思不解..... | ·68 |
| 自爱与自责..... | ·68 |
| 耽误..... | ·69 |
| 情分..... | ·69 |
| 感性与理性..... | ·69 |
| 离婚..... | ·69 |
| 怜香惜玉..... | ·69 |
| 逆反..... | ·70 |
| 追求..... | ·70 |
| 留有余地..... | ·70 |
| “知识” | ·70 |
| 拍马屁..... | ·70 |
| 天堂与地狱..... | ·71 |
| 命运..... | ·71 |
| 无知与贫穷..... | ·71 |

目 录

| | |
|------------------|----|
| 放风筝..... | 71 |
| 快刀斩乱麻..... | 71 |
| 园丁..... | 72 |
| 黑暗..... | 72 |
| 弄拙成巧..... | 72 |
| 坏事可以变成好事..... | 72 |
| 相生相克..... | 72 |
| 针锋相对..... | 73 |
| “鱼水情深”..... | 73 |
| 错误..... | 73 |
| 墙倒众人推..... | 74 |
| 指桑骂槐..... | 74 |
| 诗歌..... | 74 |
| 文痞..... | 75 |
| 流言蜚语..... | 75 |
| 动机..... | 75 |
| 言外之意..... | 75 |
| 难得糊涂..... | 75 |
| 天上掉馅饼..... | 76 |
| 友谊..... | 76 |
| 恩情与友情..... | 76 |
| 出轨..... | 76 |
| 袖手旁观..... | 77 |
| 失落、失望、失败、失态..... | 77 |
| “食”事求是..... | 77 |
| 胆大与大胆..... | 78 |
| 情夫与情妇..... | 78 |
| 男女平等..... | 79 |
| 原由..... | 79 |
| 唠叨..... | 79 |
| 义务..... | 80 |
| 好事多磨..... | 80 |
| 男人难..... | 80 |